www.sanskritarticle.com

ISSN NO. 2454-9177

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

Volume 55 (July- August, 2024)

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2024; 1(55): 78-81
© 2024 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. पन्नालाल लक्ष्मण धुर्वे
शैक्षणिक समन्वयक (हिंदी),
(सहायक प्राध्यापक लेवल),
यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त-विश्वविद्यालय, नाशिक (महाराष्ट्र)

Correspondence:
डॉ. पन्नालाल लक्ष्मण धुर्वे
शैक्षणिक समन्वयक (हिंदी),
(सहायक प्राध्यापक लेवल),
यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त-विश्वविद्यालय, नाशिक (महाराष्ट्र)

मेलघाट के प्राथमिक शाला के पाठ्यक्रम में कोरकू बोली का प्रयोग

डॉ. पन्नालाल लक्ष्मण धुर्वे

भूमिका:-

महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के बीच एक ऐसा क्षेत्र है जो मेलघाट के नाम से जाना जाता है, जो महाराष्ट्र के अमरावती जिले के अंतर्गत आता है। यह क्षेत्र धारणी और चिखलदरा इन दों तहसील मिलकर बना है। चिखलदरा ठंड क्षेत्र के रूप में भी प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र कोरकू समुदाय का मुख्य ठिकाण है इस क्षेत्र में कोरकू समुदाय के अलावा गोंड, निहाल और मोगियाँ आदि जनजातियाँ भी विशेष रूप में पाई जाती हैं।

भारत एवं महाराष्ट्र की जनजातियों में कोरकू जनजाति का विशेष महत्व है। क्योंकि एक तो इस जातियों में पर्याप्त विविधता दिखाई देती है। दूसरे भौगोलिक और ऐतिहासिक एवं परंपरा प्रिय होने के कारण इस जनजाति सामाजिक दृष्टि से संपन्न है, उनकी सामाजिक एकता अन्य समाज के लिए प्रेरणादायी हो सकती हैं। लेकिन शैक्षणिक, आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से अत्यंत कमजोर एवं पिछड़ा हुआ है । मेलघाट की कुल जनसंख्या के लगभग 90 प्रतिशत से भी ज्यादा कोरकू समुदाय निवास करते हैं। डॉ.काशीनाथ ने इस संदर्भ में अपनी किताब में लिखते हैं कि **"कोरकूच्या मध्यप्रदेशातील व महाराष्ट्रातील लोकसंख्येच्या घनतेचा विचार करता मेळघाट हेच कोरकुचे मुख्य स्थान आहे."**[1] भारतीय संविधान में एक इन्हें अनुसूचित जनजाति के रूप में शामिल किया गया है। यह समुदाय अति पिछड़ा है। कोरकू बोली ऑस्ट्रिक परिवार अंतर्गत आनेवाली बोली है। कोरकू शब्द द्रविड़ भाषा के कोरक शब्द से बना है, जिसका अर्थ है मानव होता है। कोरा शब्द को रास्ता अर्थ में भी लिया जाता है। यह समुदाय अपनी दैनंदिन बोलचाल में कोरकू बोली का प्रयोग करते हैं । कोरकू बोली के अलावा किसी दूसरी भाषा कोरकु समुदाय को नहीं आती हैं। इस समुदाय की शिक्षा स्तर काफी खराब है। इनकी शिक्षा स्तर सुधारना है, तो प्राथमिक शाला के पाठ्यक्रम में उनकी मातृभाषा का उपयोग करना अत्यंत आवश्यक है ।

कोरकू बोली का भाषा एवं साहित्य में लेखन

कोरकू समुदाय और उसकी बोली के सन्दर्भ में भारत स्वतंत्रता के पहले अंग्रेजी प्रशासन और भाषा शोध मुंबई और बंगाल के एशियाटिक सोसायटी, एन्थ्रोपालॉजिकल सोसायटी ऑफ़ बाम्बे इन इण्डिया की शोध पत्रिका में समय-समय पर अपने लेख प्रकाशित किए गए हैं। ये सभी लेखों का भाषाशास्त्र के विद्वान् डॉ. सु.बा. कुलकर्णी इन्होंने तैयार कर रखा है। जॉन ड्रेक 1903 में A grammar of the Korku language नाम से, कोलकत्ता बैप्टिस्ट मिशन ने पुस्तक प्रकाशित है। इस पुस्तक में जॉन ड्रेक ने कोरकू बोली के व्याकरणिक संरचना के बारे में स्पष्ट किया है। डॉ जॉर्ज ग्रियर्सन ने भारत के भाषिक पहचान खंड 4 में कोरकू बोली के संदर्भ में जानकारी दी है। उनके अनुसार सतपुड़ा और महादेव पर्वत

में बोली जाने वाली कोरकू बोली, यह मुंडा परिवार से सम्बंधित है। इनके अलावा नॉनस्टेन, डब्ल्यू. एच. ड्रायवर, आर.एन.कस्ट, के. पी. चट्टोपाध्याय, इ.डब्ल्यू. रामसे , झिदे नारमन, गिरार्ड बी. रसेल और हिरालाल इन सभी ने कोरकू बोली के सन्दर्भ में अपने आलेख प्रकाशित किए हैं। 1999 में पूना के डेक्कन इंस्टिट्यूट ऑफ रिसर्च सेंटर के डॉ. एस. नागराजा इन्होंने **Korku grammar and vocabulary** नाम से किताब प्रकाशित करके, कोरकू बोली के बारे में विस्तृत व्याकरणिक एवं भाषाशास्त्रीय अध्ययन किया है। यह किताब कोरकू बोली के भाषाशास्त्रीय दृष्टि की पहला प्रयास है। इनके अलावा फंच स्टेफन ने **The Korku of Vindhya Hills** पुस्तक के माध्यम से कोरकू समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास लिखने का प्रयत्न किया है। आदिवासी संस्कृति के प्रसिध्द इतिहासकर डॉ. श. गो. देवगांवकर और डॉ. शैलजा देवगांवकर ने कोरकू समाज, संस्कृति, लोकगीत, लोकसाहित्य और लोककथा के बारे में विस्तृत विश्लेषण किया है। इन्होंने 1990 में The Korku tribal नामक किताब लिखी है। इसमें इन्होंने कोरकू के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का वर्णन किया है। डॉ. गोविंद गारे, विलास संगवे, गुरुनाथ नाड़गोंडे, डॉ. विनायक तुकाराम, डॉ. अशोक पाटिल, डॉ. अजित सिंह पौहार, इन सभी ने भी कोरकू बोली और संस्कृति के संदर्भ में लेखन कार्य की है।

विश्व में आज भी अनेक भाषाओं की अपनी लिपि नहीं है। फिर भी भाषा के संदेशवाहन करने का कार्य कहीं भी रूका नहीं है। कोरकू बोली भी इसमें अपवाद नहीं है। कोरकू बोली को भाषिक दृष्टि से देखा जाए तो अत्यंत अर्थप्रवाह है। कोरकु बोली में अन्य भाषा में न मिलने वाले अनेक विशेषताएँ हैं। यह बोली मौखिक रूप से प्रयोग की जाती है। कोरकू समुदाय की कोरकू बोली ही आचार-विचार प्रकट करने की मुख्य साधन है। संज्ञापन व्यवहार में बोलना केवल भाषण नहीं होता है। उसके भाषिक वर्तन होता है, व्यक्ति के बोलने में जाने-अनजाने में सहज अपनी इच्छा-आकांक्षा और भवभावना इसमें संवाद रूप में भाषिक क्रिया होती है। भाषा मानवीय वर्तन का एक प्रकार है। भूमिका रखते हुए और भाषा व्यवहार के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए भाषा के वर्णन, विश्लेषण देना संयुक्त हो जाएगा ऐसे विचार मेलिनोवस्की ने अपने पुस्तक में स्पष्ट की है।

कोरकू बोली क़ाफी समृद्ध और सक्षम मानी जाती है। इस अलिखित बोली में ज्ञान-विज्ञान और कथा साहित्य का अनंत और अति प्राचीन भंडार मौजूद है। लेकिन आधुनिकता की आंधी में इस बोलियों परदूसरी भाषाओं और बोलियों का ज़ोरदार प्रभाव आक्रमण की तरह घातक सिद्ध हो रहा है। खासकर वर्तमान पीढ़ी पर इसका असर देखा जा सकता है। इस तरह अनेक जनजाति समुदाय की बोलियां विलुप्ति की कगार पर हैं और कई बोलियों में अन्य भाषाओं के शब्दों, मुहावरों का इतना ज़्यादा मिश्रण हो गया है कि वे अपनी मौलिकता खोती जा रही हैं।

प्रविधि

मेलघाट में 300 गाँव के आसपास हैं लगभग सभी गाँव में 85 से 90 प्रतिशत कोरकू समुदाय रहते हैं । इसके आलवा गोंड एवं अन्य जनजाति समुदाय लोग भी रहते हैं । गाँव में कोरकू बहुसंख्या होने के वजह से अपास में कोरकू बोली का प्रयोग होने कारण अन्य जनजाति समुदाय भी कोरकू बोली अच्छी तरह से समझ और बोलते हैं । मैंने शोध पत्र में धारणी तहसील के 4 गाँव जिसमें नारदु, घोटा, सलाई और धुलघाट रेल्वे और चिखलदरा तहसील के 3 गाँव जिसमें मनभंग डोमा और सलोना गाँव का चयन किया जिसमें उन गाँव के पढ़ने वाले बच्चे, शिक्षक और उनके माँ बाप से व्यक्तिगत रूप मिले एवं उनसे शिक्षा के संदर्भ में चर्चा करने पर कुछ तथ्य सामने आया जिसमें बहुत से बच्चे कोरकू के अलावा अन्य भाषा न समझते और न बोल पाते हैं। जिससे प्राथमिक शाला में कोरकू बोली एवं मातृभाषा का अनिवार्यता को महसूस कराती हैं ।

शिक्षा में अनेवाली भाषिक एवं क्षेत्रीय समस्या :-

महाराष्ट्र के मेलघाट क्षेत्र में कोरकू भाषी बहुसंख्या में पाए जाते हैं। कोरकू समुदाय कोरकू बोली के अलावा दूसरी कोई भाषा नहीं जानते हैं और इस क्षेत्र के लगभग सभी पालक वर्ग पढे-लिखे नहीं हैं। कुछ पालक तो स्कूल के दरवाजे तक नहीं गए हैं। मेलघाट ऐसा क्षेत्र है जो कि पहाड़ी और अतिदुर्गम क्षेत्र में आता है। इससे पता चलता है कि यहां की स्थिति किस प्रकार की हो सकती, इससे इस क्षेत्र की शिक्षा का स्तर भी क्या हो सकता, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है।

अगर इस क्षेत्र की शिक्षा के स्तर में सुधार करना है तो कोरकू बोली को यह की प्राथमिक शाला के पाठ्यक्रम में शामिल करके उसका प्रयोग करना पड़ेगा तभी उनकी शिक्षा में बदलाव ला सकते हैं। अन्यथा इनमें परिवर्तन करना कठिन काम है। देवनागरी लिपि की सहायता से इस बोली को पुस्तक के रूप प्राथमिक शाला में प्रयोग करना जरूरी है क्योंकि इस प्रदेश में लगभग 90 प्रतिशत कोरकू समुदाय के लोग निवास करते हैं। इस क्षेत्र में जिस तरह की शिक्षा होनी चाहिए वैसे अभी तक शिक्षा नहीं पहुँच सकी। इसका मुख्य कारण है,उनकी बोली भाषा है और अन्य भाषा की समस्या है। क्योंकि यहां की शिक्षा मराठी भाषा के माध्यम से दी जाती है। कोरकू समुदाय के लगभग सभी बच्चे मराठी नहीं जानते हैं न ही इस भाषा का प्रयोग अपने घर में करते हैं। इससे इनमें भाषागत समस्या निर्माण होती है। इस क्षेत्र के विद्यालयों में पढ़ाने वाले

अध्यापक को कोरकू बोली सामान्य जानकारी होनी चाहिए , इससे छात्र और अध्यापक के बीच में संप्रेषण की समस्या होती है। महाराष्ट्र में रहते हुए भी उन्हें मराठी भाषा नहीं आती है। क्योंकि मराठी भाषा इनकी मातृभाषा भाषा नहीं है न ही ये लोग मराठी भाषा का प्रयोग अपने दैनंदिन जीवन में करते हैं,इसलिए इस क्षेत्र के बहुत से बच्चे स्कूल जाने से डरते हैं।

कुछ वर्ष पहले महाराष्ट्र में उन्नति संस्था ने जनजातियाँ जनसंख्या बहुल विशेषत: मेलघाट क्षेत्र में कोरकू समुदाय के बच्चों को उनकी बोली भाषा में प्राथमिक शिक्षा देने की प्रक्रिया शुरू की थी, इस प्रक्रिया में कोरकू बोली को देवनागरी लिपि में लिपिबद्ध करना प्रारंभ हुआ। लेकिन यह सिर्फ कागजों पर ही देखने को मिलता है। इस पर आगे कोई कार्य नहीं किया गया है। आधुनिक शिक्षा पद्धति और सूचना क्रांति के दौर में कोरकू बोलीभी नष्ट हो जाने का खतरा मंडराने लगा है। इसलिए मध्य प्रदेश सरकार ने जनजातियों की बोलियों को लिपिबद्ध करने और व्याकरण तैयार करने का काम शुरू किया है। मध्य प्रदेश आदिम जाति अनुसंधान संस्थान के सहायक संपादक एल.एन पयौधि के अनुसार “कोरकू जनजाति, स्वयं को दुनिया की पहली इंसान प्रजाति मानती है। कोरकू शब्द का अर्थ ही मानव है।” हाल ही में आदिम जाति अनुसंधान संस्था ने कोरकुओं की बोली का व्याकरण तैयार करने में लगे हुए हैं। कोरकू जनजाति की बोली का एक सुविकसित इतिहास भी रहा है। मौजूदा समय में पारंपरिक बोलियों और भाषाओं पर लुप्त होने का संकट मंडरा रहा है। इन आदिम भाषाओं पर दूसरी प्रचलन वाली भाषाओं और बोलियों का आक्रमण हो रहा है। ऐसे समय में कोरकू बोली के संरक्षण का बीड़ा उठाया जाना चाहिए। वैसे इस बोली के कई शब्द और मुहावरें अब प्रचलन में नहीं हैं, फिर भी उनकी खोज करना जरुरी है । कोरकू बोली का शब्दकोष और व्याकरण तैयार करने में भारतीय भाषा संस्थान मैसूर के पूर्व उपनिदेशक जेसी शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जल्दी ही कोरकू बोली के शब्दकोष और व्याकरण के बारे में पुस्तक प्रकाशित हो जाएगी।

सभी जनजातीयसमुदाय को लोगों को मातृभाषा में शिक्षा लेने का आधिकार है। अपनी बोली भाषा में ली गई शिक्षा का स्तर भी उच्च रहेगा, इस विचार से कोरकू बोली में पाठ्य सामाग्री किताब रूप में निर्माण करना आवश्यक है। इसके लिए भाषा विद्वान और उन समुदाय के पढ़े लिखे लोगों को साथ मिलना बहुत जरूरी है। मराठी और कोरकू ऐसे दोनों भाषाओं को जानने बाले लोगों की मदद लेकर भाषा के उच्चारण, सरल वाक्य इसका संग्रह करके उसे देवनागरी लिपि का उपयोग कर पुस्तक रूप में उन क्षेत्रों के बच्चों तक पहुँचा सकते हैं।इससे कोरकू समुदाय के बच्चे अपनी बोली भाषा संस्कृति से रूबरू होंगे।उनके परिचित विषय होने के कारण छात्रों उदासिनता एवं रोचकता का अभाव नहीं दिखाई देगा।इसके माध्यम से कोरकू बोली का संवर्धन और मराठी भाषा से दोस्ती होगी इस तरह के प्रयोग कर दोनों उद्देश्यों को सफल बना सकते हैं।

कोरकू बोली की प्राथमिक शाला के पाठ्यक्रम में प्रयोग :-

इस क्षेत्र में जिस शिक्षक की नियुक्ति हो उन्हें कोरकू बोली आना आवश्यक हो इसलिए शिक्षकों की नियुक्ति में स्थानीय लोगों को प्राथमिकता देना आवश्यक है, ताकि वे बालकों (कोरकू व मराठी, हिंदी) भाषा में समझा, पढ़ा सके। प्राथमिक शाला में सम्मिलित कर इसके अंतर्गत बालकों में औपचारिक शिक्षा के प्रति अभिरुचि, मनोरंजन के माध्यम से उनका बौद्धिक विकास और भावी व्यवसायिक शिक्षा के लिए आवश्यक भूमिका का निर्माण करने की दृष्टि से अध्ययन वस्तु को निम्ननुसार आयोजित किया जा सकता है-

भाषा:

सामान्य भाषा: शिशु शाला में भाषा संबंधी ज्ञान का परिमार्जन। देवनागरी के वर्णक्षरों को भली-भाति और ठीक-ठीक उच्चारण के साथ पढ़ना-लिखना। अंकों को पढ़ना और लिखना। दैनिक उपयोग की वस्तुओं के जनजातीय नामों का मराठी में एवं देवनागरी में लिखना। मराठी के आदरवाचक शब्दों की जानकारी व प्रयोग। कोरकू बोली के छोटे-छोटे वाक्यों का मराठी में अनुवाद करना। मराठी भाषा में वार्तालाप करना।

व्याकरण : मराठी और हिंदी में पढ़ना, पाठ को लिखना, व्याकरण का आभ्यास करना, मात्राओं का ठीक ज्ञान, वाक्यों की रचना, कोरकू वार्तालाप का मराठी एवं हिंदी और अंग्रेजी में अनुवाद उच्चारण को शुध्द करना आदि।

मराठी और हिंदी गद्य : कोरकू बोली में सरल व मनोरंजक कहानियाँ, जिसमे वन्यजीव, वनस्पति जगत और पशु जगत का ज्ञान हो। इसी प्रकार छोटी-छोटी मराठी और हिंदी भाषा की कहानियाँ, उनका अनुवाद करना।

पद्य : कोरकू बोली में कुछ गीत मराठी में कुछ गीत उनका अनुवाद बाल सुलभ मराठी गीत और उनका कोरकू बोली में अनुवाद।

नैतिक शिक्षा : कोरकू देवताओं की जानकारी। सत्य अहिंसा, बड़ों के प्रति आदर व्यक्त करना। परस्पर सहायता, सामुदायिक भावना की महता कोरकू पर्व जिसमें त्योहार, संस्कार और परंपरा रीति-रिवाज आदि।

स्वास्थ्य एवं आरोग्यशास्त्र: मानव शरीर के विभिन्न अंग, उनके कार्य उनकी स्वच्छता, वस्त्रों की स्वच्छता, उन्हें व्यवस्थित रखना, घर की स्वच्छता, पेयजल को शुध्द रखना, उचित तरीके से भोजन करना आदि ।

व्यावसायिक शिक्षा की भूमिका के निर्माण हेतु आदतों का विकास :

शारीरिक श्रम की महता प्रतिपादित करना। बालकों को श्रम के प्रति अभिरुचि का विकास करना शाला की सफाई व रख-रखाव।

निष्कर्ष-

उपरोक्त योजना में जहा कोरकू संज्ञा का प्रयोग किया गया है, उसके स्थान पर अन्य जनजातियों के नामों को प्रस्थापित कर इस शिक्षा को उनके लिए भी प्रयोग में लाया जा सकता है। इससे उनमें शिक्षा के प्रति रुचि निर्माण करने में मदद हो सकता । इस प्रकार यह शिक्षा न केवल कोरकुओं के लिए बल्कि अन्य जनजातियों के लिए भी उपयुक्त सिध्द हो सकती है। इससे जनजातिय समुदाय का बृहद भारतीय समाज के साथ एकीकरण को सुनियोजित रूप एवं बिना जटिलताओं के सरलतापूर्वक एकीकरण के उद्देश की पूर्ति भी हो सकती है।

संदर्भ सूची:-

1. गारे, गोविंद . (2012). महाराष्ट्रातील आदिवासी जमाती, पुणे: कौटिनेन्टल प्रकाशन
2. नाडगोंडे, गुरुनाथ . (2012). भारतीय आदिवासी, पुणे : कौंटीनेंन्टल प्रकाशन
3. बरव्हाटे, काशीनाथ विनायक .(2012). कोरकू बोली वर्णनात्मक आणि समाज भाषावैज्ञानिक अभ्यास, नवी मुंबई: देवयानी प्रकाशन
4. पाटिल, अशोक. (1993).कोरकू लोकजीवन, नागपुर: विश्वभारती प्रकाशन

उत्तरदाता के नाम		गाँव	तहसील
1. अतिश हरीरम सेलुकर	-	नारदु	धारणी
2. पूर्वी दिनेश जाबेकर	-	घोटा	धारणी
3. बालाजी कास्देकर	-	सलाई	धारणी
4. सुनील भिलावेकर	-	डोमा	चिखलदरा
5. तोटे सर	-	मनभाग	चिखलदरा
6. प्रियंका मावस्कर	-	सलोना	चिखलदरा

संदर्भ:

[1] वर्णनात्मक आणि समाजभाषावैज्ञानिक अभ्यास पुष्ट क्र 09